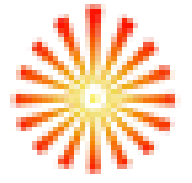


आओ चलें सम्पूर्णता की ओर



○ 25 / 11 / 14 की मुरली से चार्ट ○

⇒ TOTAL MARKS:- 100 ⇐

✽ शिवभगवानुवाच :-

» _ » रोज रात को सोने से पहले बापदादा को पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया तो धरमराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

[[1]] स्वमान का अभ्यास (Marks:-10)

» » मैं आत्मा नष्टोमोहा हूँ ।

[[2]] गुण / धारणा पर अटेंशन (Marks:-10)

» » लोकिक अलोकिक जीवन में सदा न्यारे

[[3]] बाबा से संबंध का अनुभव (Marks:-10)

» » टीचर

[[4]] होमवर्क (Marks:- 7*5=35)

||✓|| °सर्व बोझ बाप को° देकर हलके हुए ?

||✓|| बुधीयोग °सिर्फ एक बाप° के साथ रहा ?

||✓|| °सहज्योगी° बनकर रहे ?

||✓|| "हम °आत्मा भाई-भाई° हैं" - यह स्मृति रही ?

||✓|| °ज्ञान रत्नों का दान° किया ?

||✓|| सब कुछ °सहन° किया?

||x|| °उल्टे सुलटे संकल्प व विकल्प° तो नहीं चलाये ?

✽ अव्यक्त बापदादा (05/11/2014) :-

» _ » वाह दीपक बच्चे वाह! आप लोग भी अभी-अभी जगे हुए रूप से अनेक अपने भक्तों को साक्षात्कार करा रहे हैं । द्वापर से लेके आपके भक्त भी कितने होंगे! चाहे आपके रूप को जानें न जानें लेकिन उन्हीं को ड्रामा दिखा रहा है, हमारे दीपक राजे आ गये हैं । आप यहाँ साधारण रूप में बैठे हो लेकिन आपके भक्त आपको दीप के रूप में देख रहा है और बापदादा वाह बच्चे वाह के स्वरूप में देख रहे हैं । दीपराज और दीपकों का मिलन कितना सुन्दर है । बाप के दिल में वाह बच्चे वाह आ रहा है और बच्चों के दिल में वाह बाबा वाह आ रहा है ।

[[5]] विशेष अभ्यास (Marks:-15)

>> आज दिन भर दिल से "वाह बाबा वाह" निकलता रहा ?

[[6]] ज्ञान मंथन (वरदान) (Marks:-10)

>> लौकिक अलौकिक जीवन में सदा न्यारे बन परमात्म साथ का अनुभव करने के लिए हमें विशेष रूप से किन धारणाओं को धारण करना चाहिए ?

- * सर्व संबंधों की अनुभूति एक बाप से करें । "मेरा तो एक शिव बाबा .. दूसरा न कोई" - यह स्मृति बनाए रखें ।
- * आत्मा भाई-भाई की दृष्टि रखें ।
- * मेरे को तेरे में परिवर्तित करें ।
- * सब कुछ बाप के हवाले कर, स्वयं ट्रस्टी बन जाये।
- * बाप को दी हुई चीज को कभी अपना ना समझे, दान करी हुई चीज पर कभी अपना अधिकार नहीं रहता।
- * बाबा को अपना बच्चा बनाकर उन्हें अपना सबकुछ वील कर दें(वारिस बना दे)।
- * हम वानप्रस्थी है अब हमें घर जाना है, यहाँ जो कुछ इन आँखों से दिखता है वह सब खत्म होने वाला है तो इससे दिल ना लगाये।
- * दाता की देन दाता को अर्पण करदे और स्वयं तन, मन, धन से समर्पण हो जाये।

[[7]] ज्ञान मंथन (स्लोगन) (Marks:-10)

>> विकारों रूपी साँपों को अपनी छैया बना सहजयोगी बनने के लिए हमें मुख्यतः किस पुरषार्थ पर विशेष रूप से अटेंशन देना चाहिए?

- * दिन में बार-बार स्वदर्शन चक्र का अभ्यास कर विकारों रूपी साँपों की छैया बन सकता है।
- * निर्विकारी, निरहंकारी बनने का पुरषार्थ करना चाहिए।
- * देही अभिमानी बनने का अभ्यास करना चाहिए।
- * सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा करने से।
- * परचिन्तन, प्रदर्शन से मुक्त रहना चाहिए।
- * सर्व के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना मन में रखने से।
- * निमर्चित, निर्माण चित रहने का पुरषार्थ।

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले होमवर्क के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

ॐ शान्ति ॐ